Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)
E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

समकालीन हिंदी कविता में मिथक और आलोचना तत्व: एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. कविता सिंह

सहायक प्रवक्ता
हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय छर्रा अलीगढ़

सार
समकालीन हिंदी कविता ने भारतीय मिथकीय परंपरा को केवल सांस्कृतिक स्मृति या धार्मिक आस्था के रूप में स्वीकार नहीं किया है, बल्कि उसे वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और मानवीय यथार्थ की आलोचनात्मक व्याख्या के प्रभावी उपकरण के रूप में पुनर्स्थापित किया है। आधुनिक हिंदी कवियों ने रामायण, महाभारत, पुराणों तथा लोक-मिथकों के पात्रों, प्रसंगों और प्रतीकों का सृजनात्मक पुनर्पाठ करते हुए सत्ता-संरचनाओं, सामाजिक असमानताओं, लैंगिक भेदभाव, जातिगत वर्चस्व, सांप्रदायिकता, उपभोक्तावाद तथा वैश्वीकरण से उत्पन्न मानवीय संकटों पर गंभीर प्रश्न उठाए हैं। इस प्रकार मिथक अतीत की स्थिर स्मृति न रहकर वर्तमान की वैचारिक एवं सांस्कृतिक समीक्षा का सशक्त माध्यम बन जाता है।
प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य समकालीन हिंदी कविता में मिथक के बहुआयामी स्वरूप तथा उसके अंतर्निहित आलोचनात्मक तत्वों का विश्लेषण करना है। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि समकालीन कवि मिथकीय आख्यानों का यथावत् अनुकरण नहीं करते, बल्कि उन्हें नवीन सामाजिक संदर्भों में पुनर्परिभाषित करते हुए उपेक्षित, हाशिये पर स्थित तथा मौन पात्रों को नई वैचारिक पहचान प्रदान करते हैं। विशेष रूप से स्त्रीवादी, दलित, लोकतांत्रिक तथा मानवीय दृष्टियों के आलोक में मिथकों का पुनर्पाठ समकालीन कविता को वैचारिक गहराई, सांस्कृतिक पुनर्समीक्षा और सामाजिक प्रासंगिकता प्रदान करता है। शोध में आलोचनात्मक एवं व्याख्यात्मक पद्धति का उपयोग करते हुए प्रमुख समकालीन हिंदी कवियों की काव्य-दृष्टि का विश्लेषण किया गया है, जिससे यह स्थापित होता है कि मिथक आधुनिक जीवन की जटिलताओं को अभिव्यक्त करने के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन, वैचारिक प्रतिरोध और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण के प्रभावी साहित्यिक उपकरण के रूप में कार्य करता है। निष्कर्षतः, समकालीन हिंदी कविता में मिथक और आलोचना का संबंध परंपरा एवं आधुनिकता के सृजनात्मक संवाद का प्रतिनिधित्व करता है, जो हिंदी साहित्य की आलोचनात्मक चेतना को नई दिशा और व्यापक मानवीय परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है।

मुख्य शब्द: समकालीन हिंदी कविता, मिथक, मिथकीय पुनर्पाठ, आलोचनात्मक चेतना, साहित्यिक आलोचना, सांस्कृतिक विमर्श, स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श, सामाजिक यथार्थ, आधुनिक हिंदी साहित्य

1. भूमिका

भारतीय साहित्य की समृद्ध परंपरा में मिथक केवल धार्मिक आख्यान अथवा सांस्कृतिक स्मृति का माध्यम नहीं रहे हैं, बल्कि उन्होंने समाज की सामूहिक चेतना, सांस्कृतिक मूल्यों और मानवीय अनुभवों को अभिव्यक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वे किसी सभ्यता के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक अनुभवों का ऐसा रूपकात्मक विधान

हैं, जिनमें जीवन के शाश्वत प्रश्न, नैतिक द्वंद्व, सत्ता-संबंध, संघर्ष, न्याय-अन्याय तथा मानव अस्तित्व की जटिलताएँ निहित रहती हैं। भारतीय संदर्भ में *रामायण, महाभारत,* पुराणों तथा लोक-कथाओं से निर्मित मिथकीय संसार केवल आस्था का विषय नहीं है, बल्कि वह भारतीय समाज की सांस्कृतिक संरचना और सामूहिक स्मृति का अभिन्न अंग भी है। यही कारण है कि समय के साथ साहित्यकारों ने मिथकों को प्रत्येक युग की सामाजिक और वैचारिक आवश्यकताओं के अनुरूप नए अर्थ प्रदान किए हैं [1-4]।

समकालीन हिंदी कविता, विशेषतः बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से विकसित काव्यधारा, भारतीय समाज में तीव्र सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तनों की साक्षी रही है। लोकतांत्रिक मूल्यों का विस्तार, वैश्वीकरण, बाजारवाद, उपभोक्तावादी संस्कृति, तकनीकी विकास, स्त्री-अधिकार आंदोलन, दलित चेतना, आदिवासी अस्मिता, पर्यावरणीय संकट तथा बदलते मानवीय संबंधों ने साहित्य की संवेदना और अभिव्यक्ति दोनों को प्रभावित किया है [5-6]। इन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप समकालीन कवियों ने परंपरा को स्थिर और अपरिवर्तनीय मानने के स्थान पर उसकी पुनर्व्याख्या की आवश्यकता अनुभव की। इस पुनर्व्याख्या की प्रक्रिया में मिथक एक प्रभावशाली साहित्यिक और वैचारिक उपकरण के रूप में उभरकर सामने आया [7-8]। समकालीन हिंदी कविता में मिथकों का प्रयोग उनके मूल धार्मिक या पौराणिक स्वरूप की पुनरावृत्ति के लिए नहीं, बल्कि वर्तमान सामाजिक यथार्थ की आलोचनात्मक व्याख्या के लिए किया जाता है। आधुनिक कवि मिथकीय पात्रों, घटनाओं और प्रतीकों को वर्तमान संदर्भों से जोड़कर सत्ता, सामाजिक विषमता, नैतिक पतन, लैंगिक असमानता, जातिगत भेदभाव, हिंसा, सांप्रदायिकता और मानवीय संवेदनहीनता जैसे प्रश्नों पर गंभीर विमर्श प्रस्तुत करते हैं। इस प्रक्रिया में मिथक स्थिर आख्यान न रहकर एक गतिशील बौद्धिक संरचना का रूप ग्रहण कर लेता है, जिसके माध्यम से समकालीन समाज की विसंगतियों को अधिक प्रभावी ढंग से उद्घाटित किया जाता है [9-11]।

समकालीन कवियों की विशिष्टता इस बात में निहित है कि वे मिथकीय पात्रों को केवल आदर्श या पूजनीय रूप में प्रस्तुत नहीं करते, बल्कि उन्हें मानवीय दृष्टि से पुनः समझने का प्रयास करते हैं। उदाहरणार्थ, सीता, द्रौपदी, अहिल्या, गंधारी, कर्ण, एकलव्य, शंबूक, अश्वत्थामा अथवा नचिकेता जैसे पात्र आधुनिक कविता में नए अर्थों के साथ उपस्थित होते हैं। ये पात्र अब केवल पौराणिक आख्यानों के अंग नहीं रह जाते, बल्कि स्त्री-अस्मिता, सामाजिक न्याय, लोकतांत्रिक अधिकार, प्रतिरोध, उपेक्षा, संघर्ष तथा मानवीय गरिमा के प्रतीक बन जाते हैं। इस प्रकार समकालीन कविता मिथकों के माध्यम से इतिहास के मौन पक्षों को स्वर देती है तथा उन पात्रों को केंद्र में लाती है जिन्हें पारंपरिक आख्यानों में अपेक्षित महत्व नहीं मिला था [12]।

मिथक और आलोचना का संबंध समकालीन हिंदी कविता का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष है। यहाँ आलोचना का आशय केवल साहित्यिक समीक्षा से नहीं, बल्कि समाज, संस्कृति, सत्ता, विचारधाराओं और स्थापित मूल्यों के विवेकपूर्ण परीक्षण से है। समकालीन कवि मिथकों का पुनर्पाठ करते हुए परंपरा में निहित सत्ता-संबंधों, पितृसत्तात्मक संरचनाओं, जातिगत वर्चस्व, धार्मिक रूढ़ियों तथा सामाजिक असमानताओं की आलोचना करते हैं। इस प्रकार मिथक एक वैचारिक प्रतिरोध के रूप में कार्य करता है, जो पाठक को अतीत और वर्तमान के बीच संवाद स्थापित करने के लिए प्रेरित करता है। यह संवाद न केवल सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखता है, बल्कि नए सामाजिक मूल्यों के निर्माण में भी सहायक सिद्ध होता है [13-15]।

समकालीन हिंदी कविता में मिथकीय पुनर्पाठ का एक महत्वपूर्ण आयाम यह भी है कि वह परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित करता है। कवि मिथकों को न तो पूरी तरह अस्वीकार करते हैं और न ही उन्हें अपरिवर्तनीय सत्य के रूप में स्वीकार करते हैं। वे उनकी पुनर्समीक्षा करते हुए उनमें निहित मानवीय, नैतिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों को समकालीन संदर्भों में पुनः अर्थवान बनाते हैं। इस प्रकार मिथक अतीत और वर्तमान के मध्य एक सृजनात्मक सेतु

का कार्य करता है, जो साहित्य को ऐतिहासिक गहराई, सांस्कृतिक व्यापकता और वैचारिक प्रासंगिकता प्रदान करता है [16-18]।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य समकालीन हिंदी कविता में मिथक के विविध रूपों तथा उनमें निहित आलोचनात्मक तत्वों का विश्लेषण करना है। अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया है कि आधुनिक हिंदी कवि मिथकों का किस प्रकार पुनर्पाठ करते हैं, वे किन सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रश्नों को उनके माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं, तथा मिथकीय संरचनाएँ समकालीन आलोचनात्मक चेतना के निर्माण में किस प्रकार योगदान देती हैं। यह शोध साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा आलोचनात्मक दृष्टिकोणों के समन्वित अध्ययन पर आधारित है, जिसके माध्यम से यह स्थापित किया जाएगा कि समकालीन हिंदी कविता में मिथक केवल सांस्कृतिक विरासत नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन, वैचारिक प्रतिरोध और मानवीय विमर्श का सशक्त माध्यम है। इस दृष्टि से मिथक और आलोचना का अंतर्संबंध समकालीन हिंदी कविता की वैचारिक ऊर्जा, सौंदर्यबोध और सामाजिक प्रतिबद्धता को समझने की एक महत्त्वपूर्ण आधारभूमि प्रदान करता है [19-21]।

2. मिथक की अवधारणा: स्वरूप, परिभाषाएँ एवं सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

मिथक मानव सभ्यता की प्राचीनतम अभिव्यक्तियों में से एक है, जो किसी समाज की सामूहिक चेतना, सांस्कृतिक स्मृति और जीवन-दृष्टि को संरक्षित करता है। मिथक केवल काल्पनिक कथा या धार्मिक आख्यान नहीं है, बल्कि वह मानव अनुभवों, सामाजिक संरचनाओं, प्राकृतिक घटनाओं और अस्तित्वगत प्रश्नों की प्रतीकात्मक व्याख्या करने वाली एक व्यापक सांस्कृतिक संरचना है। मानव समाज ने अपने प्रारंभिक विकास काल में प्रकृति, जीवन, मृत्यु, सृष्टि, देवत्व और मानवीय संबंधों को समझने के लिए जिन कथात्मक रूपों का निर्माण किया, वे आगे चलकर मिथक के रूप में विकसित हुए। इस दृष्टि से मिथक मानव सभ्यता के मानसिक और सांस्कृतिक विकास का महत्वपूर्ण दस्तावेज है।

भारतीय साहित्यिक परंपरा में मिथक का संबंध प्राचीन आख्यानों, धार्मिक विश्वासों और सांस्कृतिक प्रतीकों से जुड़ा रहा है। भारतीय मिथकीय चेतना का निर्माण मुख्यतः *वेदों*, *उपनिषदों*, *रामायण*, *महाभारत*, पुराणों तथा लोक परंपराओं के माध्यम से हुआ है। इन ग्रंथों में वर्णित कथाएँ केवल धार्मिक शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से निर्मित नहीं हुईं, बल्कि उनमें जीवन-दर्शन, नैतिक संघर्ष, सामाजिक व्यवस्था और मानवीय संबंधों की गहन व्याख्या भी निहित है। भारतीय परंपरा में मिथक को सत्य और कल्पना के सरल विभाजन में नहीं देखा जाता, बल्कि वह सांस्कृतिक सत्य की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति के रूप में स्वीकार किया जाता है। यही कारण है कि भारतीय साहित्य में मिथकीय कथाएँ विभिन्न युगों में नए अर्थों के साथ पुनः व्याख्यायित होती रही हैं।

2.1 मिथक का अर्थ एवं परिभाषा

'मिथक' शब्द अंग्रेजी के *Myth* का हिंदी रूपांतरण है, जिसकी उत्पत्ति यूनानी शब्द *Mythos* से मानी जाती है। यूनानी भाषा में *Mythos* का अर्थ कथा, आख्यान या कथन से है। आधुनिक साहित्य और संस्कृति अध्ययन में मिथक का अर्थ ऐसी प्रतीकात्मक कथा से लिया जाता है, जो किसी समुदाय के विश्वासों, मूल्यों और सामूहिक अनुभवों को व्यक्त करती है।

प्रसिद्ध मिथक-विशेषज्ञ मिर्चा एलीयाडे के अनुसार मिथक पवित्र कथाएँ होती हैं, जो संसार की उत्पत्ति, मानव जीवन और सांस्कृतिक व्यवस्थाओं के आरंभ की व्याख्या करती हैं। उनके विचार में मिथक केवल अतीत की घटना नहीं है, बल्कि वह मनुष्य को अपने अस्तित्व और संस्कृति के मूल स्रोतों से जोड़ने वाला माध्यम है।

कार्ल गुस्ताव युंग ने मिथक को मानव सामूहिक अचेतन से जोड़ा। उनके अनुसार मिथकीय प्रतीक मानव मन में विद्यमान सार्वभौमिक मानसिक संरचनाओं को अभिव्यक्त करते हैं। इस दृष्टिकोण से मिथक केवल बाहरी कथा नहीं, बल्कि मानव मन की गहरी संवेदनाओं, भय, आकांक्षाओं और अनुभवों का प्रतीकात्मक रूप है।
क्लोद लेवी-स्ट्रॉस ने मिथक को एक संरचनात्मक व्यवस्था के रूप में देखा। उनके अनुसार मिथकीय कथाओं में उपस्थित विरोधी तत्व—जैसे जीवन-मृत्यु, प्रकृति-संस्कृति, व्यवस्था-अराजकता—मानव समाज की मूल समस्याओं और मानसिक संरचनाओं को व्यक्त करते हैं। इस दृष्टि से मिथक सामाजिक संरचनाओं को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम बन जाता है। भारतीय साहित्यिक चिंतन में मिथक को सांस्कृतिक स्मृति और प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है। भारतीय आलोचना परंपरा में मिथक को केवल पौराणिक कथा के रूप में सीमित नहीं किया गया, बल्कि उसे मानव जीवन के व्यापक अनुभवों और सामाजिक चेतना से संबंधित माना गया है। आधुनिक हिंदी साहित्य में मिथक का प्रयोग इसी व्यापक अर्थ में हुआ है, जहाँ वह परंपरा और आधुनिकता के बीच संवाद स्थापित करने का कार्य करता है।

2.2 मिथक का स्वरूप

मिथक का स्वरूप बहुआयामी है। इसमें धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और साहित्यिक सभी तत्व समाहित होते हैं। मिथक की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(क) सांस्कृतिक स्वरूप

मिथक किसी समाज की सांस्कृतिक पहचान का आधार होता है। वह समाज के विश्वासों, मूल्यों और परंपराओं को पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित करता है। भारतीय समाज में राम, कृष्ण, शिव, सीता, द्रौपदी, कर्ण जैसे मिथकीय पात्र केवल धार्मिक चरित्र नहीं हैं, बल्कि वे सांस्कृतिक प्रतीकों के रूप में स्थापित हैं।

(ख) प्रतीकात्मक स्वरूप

मिथक प्रत्यक्ष अर्थों से अधिक गहरे प्रतीकात्मक अर्थों को व्यक्त करता है। उदाहरण के लिए, महाभारत का कुरुक्षेत्र केवल युद्धभूमि नहीं, बल्कि मानव जीवन के नैतिक संघर्षों का प्रतीक है। इसी प्रकार कर्ण सामाजिक उपेक्षा और पहचान के संघर्ष का प्रतीक बन जाता है।

(ग) सामाजिक स्वरूप

मिथक समाज की संरचनाओं और संबंधों को प्रतिबिंबित करता है। समय के साथ मिथकों की पुनर्व्याख्या के माध्यम से समाज में व्याप्त असमानताओं और रूढ़ियों की आलोचना की जाती है। समकालीन हिंदी कविता में मिथकों का यही सामाजिक पक्ष अत्यंत महत्वपूर्ण है।

(घ) परिवर्तनशील स्वरूप

मिथक स्थिर नहीं होता। प्रत्येक युग का साहित्यकार अपने समय की आवश्यकताओं के अनुसार मिथकों को नए अर्थ प्रदान करता है। यही परिवर्तनशीलता मिथक को जीवंत बनाए रखती है। समकालीन हिंदी कविता में मिथकीय पुनर्पाठ इसी परिवर्तनशील प्रक्रिया का परिणाम है।

2.3 साहित्य में मिथक की भूमिका

साहित्य में मिथक रचनात्मक ऊर्जा का स्रोत होता है। यह लेखक को अतीत के सांस्कृतिक अनुभवों से जोड़ते हुए वर्तमान की समस्याओं को व्यक्त करने की क्षमता प्रदान करता है। मिथक के माध्यम से साहित्यकार जटिल सामाजिक और दार्शनिक प्रश्नों को अधिक प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर सकता है।

आधुनिक और समकालीन हिंदी कविता में मिथक का प्रयोग विशेष रूप से आलोचनात्मक दृष्टि के विकास के लिए किया गया है। कवियों ने मिथकीय पात्रों और घटनाओं के माध्यम से वर्तमान समाज की विसंगतियों को उजागर किया है। इस प्रक्रिया में मिथक केवल कथा-स्रोत नहीं रहता, बल्कि सामाजिक चेतना और वैचारिक प्रतिरोध का माध्यम बन जाता है।

इस प्रकार मिथक परंपरा और आधुनिकता के बीच एक महत्वपूर्ण संवाद स्थापित करता है। यह अतीत की स्मृतियों को वर्तमान की समस्याओं से जोड़कर साहित्य को व्यापक सांस्कृतिक और आलोचनात्मक दृष्टि प्रदान करता है। समकालीन हिंदी कविता में मिथक का महत्व इसी कारण अत्यधिक बढ़ गया है, क्योंकि वह वर्तमान यथार्थ को समझने और उसकी समीक्षा करने का एक प्रभावी माध्यम बन गया है।

3. समकालीन हिंदी कविता की प्रवृत्तियाँ और मिथकीय चेतना का विकास

समकालीन हिंदी कविता आधुनिक हिंदी साहित्य की वह महत्वपूर्ण धारा है, जिसमें स्वतंत्रता-उत्तर भारतीय समाज के बदलते हुए सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संदर्भों की अभिव्यक्ति दिखाई देती है। यह कविता केवल सौंदर्यबोध या व्यक्तिगत अनुभूतियों तक सीमित नहीं रहती, बल्कि अपने समय के जटिल यथार्थ, संघर्षों और अंतर्विरोधों से सक्रिय संवाद स्थापित करती है। समकालीन हिंदी कविता में व्यक्ति और समाज, परंपरा और आधुनिकता, आस्था और तर्क, सत्ता और प्रतिरोध, तथा केंद्र और हाशिये के संबंधों को नए दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया गया है।

स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय समाज में लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना, औद्योगीकरण, शहरीकरण, राजनीतिक अस्थिरता, आर्थिक विषमता और सामाजिक परिवर्तन जैसी प्रक्रियाओं ने साहित्यिक चेतना को गहराई से प्रभावित किया। कवियों ने अनुभव किया कि पारंपरिक काव्य-विषय और अभिव्यक्ति-शैलियाँ आधुनिक जीवन की जटिलताओं को पूर्ण रूप से व्यक्त करने में पर्याप्त नहीं हैं। परिणामस्वरूप कविता में नए विषयों, नए प्रतीकों और नए शिल्प का विकास हुआ। इसी प्रक्रिया में मिथक ने एक महत्वपूर्ण साहित्यिक उपकरण के रूप में पुनः अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

समकालीन हिंदी कविता में मिथक का प्रयोग अतीत के गौरवगान के लिए नहीं, बल्कि वर्तमान की आलोचनात्मक समझ विकसित करने के लिए किया गया है। कवियों ने पौराणिक आख्यानों और पात्रों को आधुनिक संदर्भों में पुनर्स्थापित करते हुए उनमें निहित सामाजिक और वैचारिक अर्थों को उद्घाटित किया है। मिथक अब केवल धार्मिक विश्वास का विषय नहीं रहा, बल्कि वह सामाजिक संरचनाओं, सत्ता संबंधों और मानवीय संघर्षों को समझने का माध्यम बन गया है।

3.1 नई कविता और मिथकीय चेतना

नई कविता आंदोलन (लगभग 1940 के दशक के उत्तरार्द्ध से 1960 के दशक तक) ने हिंदी कविता में आधुनिक संवेदना, व्यक्तिवादी चेतना और अस्तित्वगत प्रश्नों को प्रमुखता प्रदान की। इस काल के कवियों ने परंपरा को अस्वीकार करने के बजाय उसका आधुनिक दृष्टि से पुनर्मूल्यांकन किया। मिथकों का प्रयोग इस दौर में मानव अस्तित्व, नैतिक संकट और आधुनिक जीवन की विडंबनाओं को व्यक्त करने के लिए किया गया।

अज्ञेय ने मिथकीय संकेतों और प्रतीकों के माध्यम से आधुनिक मनुष्य की आंतरिक जटिलताओं को अभिव्यक्त किया। उनके साहित्य में मिथक केवल कथा-संदर्भ नहीं, बल्कि अस्तित्वगत प्रश्नों और आत्मचेतना के प्रतीक के रूप में उपस्थित होता है।

इसी परंपरा में कुँवर नारायण का योगदान विशेष उल्लेखनीय है। उनकी कृति *आत्मजयी* में नचिकेता के मिथक के माध्यम से मृत्यु, जीवन, ज्ञान और मानवीय जिज्ञासा जैसे सार्वभौमिक प्रश्नों की आधुनिक व्याख्या प्रस्तुत की गई है। इसी प्रकार *वाजश्रवा के बहाने* में उन्होंने पारंपरिक मिथकीय आख्यान को नई मानवीय संवेदना और आलोचनात्मक दृष्टि प्रदान की।

3.2 साठोत्तरी कविता और सामाजिक यथार्थ

1960 के बाद हिंदी कविता में सामाजिक और राजनीतिक चेतना अधिक तीव्र हुई। साठोत्तरी कविता ने व्यवस्था-विरोध, जनजीवन की समस्याओं और राजनीतिक विडंबनाओं को केंद्र में रखा। इस दौर के कवियों ने मिथकों का प्रयोग स्थापित सत्ता-संरचनाओं की आलोचना के लिए किया।

धूमिल की कविता में व्यवस्था और सत्ता के प्रति तीखा आक्रोश दिखाई देता है। उन्होंने आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था की विसंगतियों को व्यक्त करने के लिए अनेक सांस्कृतिक प्रतीकों और संकेतों का प्रयोग किया। उनके यहाँ मिथकीय संदर्भ आधुनिक राजनीतिक यथार्थ की आलोचना का माध्यम बनते हैं।

इसी प्रकार अन्य समकालीन कवियों ने महाभारत, रामायण और पुराणों के प्रसंगों को आधुनिक सामाजिक संदर्भों से जोड़कर देखा। कुरुक्षेत्र, हस्तिनापुर, युद्ध, निर्वासन और संघर्ष जैसे मिथकीय बिंब आधुनिक समाज की सत्ता-संघर्ष और नैतिक संकट की अभिव्यक्ति बन गए।

3.3 जनवादी चेतना और मिथक का सामाजिक पुनर्पाठ

जनवादी कविता ने साहित्य को आम जनता के जीवन, संघर्ष और सामाजिक वास्तविकताओं से जोड़ने का कार्य किया। इस धारा के कवियों ने मिथकों को जनपक्षधर दृष्टि से देखा और उनमें छिपे सामाजिक अर्थों को सामने लाने का प्रयास किया।

मिथकीय पात्रों के माध्यम से श्रम, शोषण, असमानता और सामाजिक न्याय के प्रश्नों को उठाया गया। कर्ण, एकलव्य और शंबूक जैसे पात्र आधुनिक कविता में इसलिए महत्वपूर्ण बने क्योंकि वे सामाजिक व्यवस्था द्वारा उपेक्षित वर्गों के प्रतिनिधि प्रतीक के रूप में देखे गए।

इस प्रकार मिथक का लोकतंत्रीकरण हुआ और साहित्य में उन आवाजों को स्थान मिला जो परंपरागत आख्यानों में हाशिये पर थीं।

3.4 स्त्री-विमर्श और मिथकीय पुनर्व्याख्या

समकालीन हिंदी कविता में स्त्रीवादी चेतना ने मिथकों के पुनर्पाठ को एक नई दिशा प्रदान की। पारंपरिक मिथकीय आख्यानों में स्त्री पात्रों को प्रायः आदर्श, त्याग और सहनशीलता के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया था, लेकिन आधुनिक कवयित्रियों ने इन पात्रों को स्वतंत्र चेतना और अस्मिता के संदर्भ में पुनः देखा।

सीता, द्रौपदी, अहिल्या और गंधारी जैसे पात्र समकालीन कविता में प्रश्न करने वाली, संघर्ष करने वाली और अपनी पहचान खोजने वाली स्त्रियों के रूप में सामने आते हैं। इस पुनर्पाठ के माध्यम से पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचनाओं की आलोचना की गई तथा स्त्री अनुभवों को साहित्य के केंद्र में स्थापित किया गया।

अनामिका जैसी कवयित्रियों ने मिथकीय स्त्री पात्रों को नए अर्थ प्रदान करते हुए स्त्री-अस्मिता, स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय के प्रश्नों को प्रमुखता दी।

3.5 दलित विमर्श और मिथकीय प्रतिरोध

समकालीन हिंदी साहित्य में दलित विमर्श ने मिथकों की पुनर्व्याख्या को एक महत्वपूर्ण वैचारिक आधार प्रदान किया है। दलित दृष्टि से मिथकों का अध्ययन करते हुए उन सामाजिक संरचनाओं की आलोचना की गई, जिन्होंने ऐतिहासिक रूप से कुछ वर्गों को हाशिये पर रखा।

एकलव्य और शंबूक जैसे पात्र आधुनिक साहित्य में प्रतिरोध और सामाजिक न्याय के प्रतीक बनकर उभरे हैं। इन पात्रों के माध्यम से जातिगत असमानता, अवसरों की विषमता और सामाजिक बहिष्कार जैसे प्रश्नों को उठाया गया है। इस प्रकार मिथक समकालीन कविता में केवल सांस्कृतिक स्मृति नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन और प्रतिरोध का माध्यम बन जाता है।

3.6 मिथकीय चेतना का समकालीन स्वरूप

समकालीन हिंदी कविता में मिथकीय चेतना का स्वरूप बहुआयामी है। इसमें परंपरा का सम्मान भी है और उसकी आलोचनात्मक समीक्षा भी। आधुनिक कवि मिथकों को पुनर्जीवित करते हुए उन्हें नए सामाजिक संदर्भों में अर्थ प्रदान करते हैं।

मिथकीय चेतना के प्रमुख आयाम निम्नलिखित हैं—

1. **परंपरा का पुनर्मूल्यांकन** – मिथकों को नए दृष्टिकोण से समझना।
2. **सामाजिक आलोचना** – सत्ता, असमानता और रूढ़ियों पर प्रश्न उठाना।
3. **हाशिये की आवाजों को स्थान देना** – उपेक्षित पात्रों की पुनर्स्थापना।
4. **मानवीय मूल्यों की खोज** – मिथकों के माध्यम से सार्वभौमिक मानवीय प्रश्नों को उठाना।
5. **आधुनिक समस्याओं की अभिव्यक्ति** – मिथकीय प्रतीकों द्वारा वर्तमान संकटों को प्रस्तुत करना।

अतः समकालीन हिंदी कविता में मिथक एक जीवंत और गतिशील साहित्यिक संरचना के रूप में उपस्थित है। वह अतीत और वर्तमान के बीच संवाद स्थापित करता है तथा कविता को सामाजिक, सांस्कृतिक और आलोचनात्मक दृष्टि प्रदान करता है। मिथकीय चेतना ने समकालीन हिंदी कविता को केवल अभिव्यक्ति का नया माध्यम ही नहीं दिया, बल्कि उसे समाज और संस्कृति के गहन विश्लेषण का सशक्त उपकरण भी बनाया है।

4. समकालीन हिंदी कविता में मिथक का प्रयोग : प्रमुख कवियों और काव्य-कृतियों का विश्लेषण

समकालीन हिंदी कविता में मिथक का प्रयोग केवल कथात्मक आधार के रूप में नहीं, बल्कि वैचारिक, सांस्कृतिक और आलोचनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में हुआ है। आधुनिक कवियों ने मिथकीय आख्यानों को पुनः ग्रहण करते हुए उन्हें वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों, मानवीय संघर्षों और वैचारिक प्रश्नों से जोड़ा है। इस प्रक्रिया में मिथक अपने पारंपरिक अर्थों से आगे बढ़कर नए सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में पुनर्स्थापित होता है। समकालीन कवि मिथकीय पात्रों और घटनाओं के माध्यम से आधुनिक जीवन की जटिलताओं, नैतिक संकटों और सामाजिक विसंगतियों को अभिव्यक्त करते हैं।

मिथकीय पुनर्पाठ की यह प्रक्रिया इस बात को स्पष्ट करती है कि मिथक अतीत की निष्क्रिय स्मृति नहीं है, बल्कि वह वर्तमान को समझने और उसकी आलोचना करने का एक सशक्त माध्यम है। समकालीन हिंदी कविता में विभिन्न कवियों ने अपनी-अपनी वैचारिक दृष्टि के अनुसार मिथकों का प्रयोग किया है। कुछ कवियों ने अस्तित्ववादी प्रश्नों को व्यक्त करने के लिए मिथकों का सहारा लिया, तो कुछ ने सामाजिक असमानता, राजनीतिक विडंबना और स्त्री अस्मिता के प्रश्नों को उठाने के लिए मिथकीय संरचनाओं का पुनर्पाठ किया।

4.1 कुँवर नारायण: मिथक का दार्शनिक और मानवीय पुनर्पाठ

समकालीन हिंदी कविता में कुँवर नारायण का स्थान मिथकीय पुनर्व्याख्या के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने भारतीय मिथकों को केवल परंपरा के रूप में स्वीकार नहीं किया, बल्कि उनमें निहित दार्शनिक और मानवीय संभावनाओं को आधुनिक संदर्भों में प्रस्तुत किया।

उनकी प्रसिद्ध कृति *आत्मजयी* में नचिकेता के उपनिषदिक मिथक का आधुनिक पुनर्पाठ दिखाई देता है। कठोपनिषद के नचिकेता को कवि ने केवल धार्मिक पात्र के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे जिज्ञासु, प्रश्नशील और सत्य की खोज करने वाले आधुनिक मनुष्य के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है। नचिकेता का मृत्यु के देवता यम से संवाद जीवन और मृत्यु के रहस्यों की खोज के साथ-साथ मनुष्य की आत्मचेतना और अस्तित्वगत संघर्ष का प्रतीक बन जाता है।

कुँवर नारायण के यहाँ मिथक का उद्देश्य अतीत की पुनरावृत्ति नहीं, बल्कि वर्तमान मनुष्य की समस्याओं को समझना है। वे मिथक के माध्यम से हिंसा, सत्ता, नैतिकता और मानवीय जिम्मेदारी जैसे प्रश्नों पर विचार करते हैं। उनकी कविता में मिथक मानवतावादी दृष्टि से पुनर्निर्मित होता है।

इसी क्रम में *वाजश्रवा के बहाने* में उन्होंने नचिकेता के मिथक को एक नए दृष्टिकोण से देखा है। यहाँ पिता-पुत्र संबंध, पीढ़ियों के बीच संवाद और मानवीय संवेदना के प्रश्न प्रमुख हो जाते हैं। इस प्रकार कुँवर नारायण मिथक को दार्शनिक चिंतन और मानवीय मूल्यों के पुनर्सृजन का माध्यम बनाते हैं।

4.2 धूमिल: मिथक और राजनीतिक आलोचना

धूमिल की कविता में मिथकीय संकेत आधुनिक राजनीतिक और सामाजिक यथार्थ की आलोचना के रूप में प्रयुक्त होते हैं। उनकी कविता व्यवस्था, सत्ता और लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति गहरे असंतोष को व्यक्त करती है।

धूमिल के काव्य में मिथकीय प्रतीक आधुनिक समाज की विडंबनाओं को उजागर करने का माध्यम बनते हैं। वे परंपरागत प्रतीकों को नए अर्थ प्रदान करते हुए यह दिखाते हैं कि आधुनिक समाज में नैतिक मूल्यों का ह्रास किस प्रकार हो रहा है। उनके यहाँ मिथक आदर्शों का प्रतीक न होकर सामाजिक वास्तविकताओं को पहचानने का उपकरण बन जाता है। महाभारत जैसे मिथकीय संदर्भों में उपस्थित सत्ता संघर्ष, नैतिक द्वंद्व और युद्ध की स्थितियाँ आधुनिक राजनीतिक परिस्थितियों से जुड़ जाती हैं। इस प्रकार धूमिल मिथक के माध्यम से सत्ता की आलोचना करते हैं और सामाजिक चेतना को जागृत करने का प्रयास करते हैं।

4.3 केदारनाथ सिंह: लोक संस्कृति और मिथकीय संवेदना

केदारनाथ सिंह की कविता में मिथक का संबंध भारतीय लोक जीवन, प्रकृति और सांस्कृतिक स्मृतियों से जुड़ा हुआ है। उन्होंने मिथकीय चेतना को आधुनिक जीवन के अनुभवों से जोड़ा।

उनकी कविता में ग्रामीण जीवन, लोक प्रतीक और सांस्कृतिक बिंब महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे मिथकीय तत्वों को किसी धार्मिक आग्रह के रूप में नहीं, बल्कि मानवीय अनुभवों और सांस्कृतिक पहचान के रूप में ग्रहण करते हैं। केदारनाथ सिंह के यहाँ प्रकृति, मनुष्य और संस्कृति के बीच संबंधों को समझने के लिए मिथकीय संकेतों का प्रयोग किया गया है। उनकी कविता में मिथक आधुनिक जीवन की संवेदनहीनता के बीच मानवीय संबंधों और सांस्कृतिक मूल्यों को बचाए रखने का माध्यम बनता है।

4.4 अनामिका: स्त्रीवादी दृष्टि से मिथकों का पुनर्पाठ

समकालीन हिंदी कविता में अनामिका ने मिथकीय स्त्री पात्रों की पुनर्व्याख्या के माध्यम से स्त्रीवादी चेतना को मजबूत किया है। उन्होंने उन स्त्री पात्रों को नए संदर्भों में प्रस्तुत किया है, जिन्हें पारंपरिक आख्यानों में प्रायः त्याग, सहनशीलता और आदर्श के सीमित रूपों में देखा गया था।

सीता, द्रौपदी, अहिल्या और अन्य मिथकीय स्त्रियाँ उनकी कविता में अपनी स्वतंत्र चेतना, अनुभव और संघर्ष के साथ उपस्थित होती हैं। इस पुनर्पाठ के माध्यम से कवयित्री पितृसत्तात्मक संरचनाओं की आलोचना करती हैं और स्त्री की स्वतंत्र पहचान के प्रश्न को केंद्र में लाती हैं। अनामिका के यहाँ मिथक स्त्री अनुभवों को अभिव्यक्ति देने वाला माध्यम बन जाता है। वे मिथकीय कथाओं में छिपे मौन पक्षों को सामने लाकर स्त्री विमर्श को नई वैचारिक दिशा प्रदान करती हैं।

4.5 अरुण कमल: मिथक और सामाजिक यथार्थ

अरुण कमल की कविता में मिथकीय संदर्भ सामाजिक जीवन और जनसाधारण की समस्याओं से जुड़े हुए दिखाई देते हैं। उन्होंने मिथकों को वर्तमान सामाजिक संघर्षों और मानवीय संवेदनाओं के संदर्भ में देखा।

उनकी कविता में मिथक शोषण, संघर्ष और सामाजिक असमानता को समझने का माध्यम बनता है। वे परंपरागत प्रतीकों को आधुनिक जीवन की समस्याओं से जोड़कर एक आलोचनात्मक दृष्टि विकसित करते हैं।

4.6 मंगलेश डबराल: स्मृति, लोक और मिथकीय अनुभव

मंगलेश डबराल की कविता में मिथकीय चेतना लोक जीवन और सांस्कृतिक स्मृति से जुड़ी हुई दिखाई देती है। पहाड़, प्रकृति और स्थानीय संस्कृति के माध्यम से वे उस सामूहिक अनुभव को व्यक्त करते हैं जिसमें मिथकीय तत्व सहज रूप से उपस्थित रहते हैं।

उनकी कविता में मिथक किसी अलौकिक संसार का निर्माण नहीं करता, बल्कि साधारण मनुष्य के जीवन, संघर्ष और स्मृतियों से जुड़कर मानवीय अनुभव का हिस्सा बन जाता है।

4.7 मिथकीय पुनर्पाठ की आलोचनात्मक भूमिका

समकालीन हिंदी कविता में मिथकों के प्रयोग का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष उनका आलोचनात्मक स्वरूप है। कवि मिथकों को पुनः प्रस्तुत करते हुए समाज की स्थापित धारणाओं और सत्ता संरचनाओं की समीक्षा करते हैं।

मिथकीय पुनर्पाठ के माध्यम से—

- परंपरागत मूल्यों की आलोचना की जाती है।
- उपेक्षित पात्रों को नई पहचान मिलती है।
- सामाजिक न्याय और समानता के प्रश्न उठाए जाते हैं।
- स्त्री और दलित विमर्श को वैचारिक आधार मिलता है।
- आधुनिक जीवन की विसंगतियों को प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

इस प्रकार समकालीन हिंदी कविता में मिथक एक जीवंत साहित्यिक संरचना के रूप में कार्य करता है, जो अतीत को वर्तमान से जोड़ते हुए सामाजिक और सांस्कृतिक आलोचना का माध्यम बनता है। मिथकीय पुनर्पाठ ने हिंदी कविता को न केवल नवीन अभिव्यक्ति प्रदान की है, बल्कि उसे व्यापक मानवीय और वैचारिक संदर्भ भी प्रदान किए हैं।

5. समकालीन हिंदी कविता में आलोचना तत्व: सत्ता, समाज और संस्कृति का पुनर्मूल्यांकन

समकालीन हिंदी कविता का एक प्रमुख वैशिष्ट्य उसकी आलोचनात्मक चेतना है। यह कविता केवल भावनात्मक अनुभूति अथवा सौंदर्यबोध की अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि अपने समय के सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और वैचारिक प्रश्नों से सक्रिय रूप से जुड़ती है। समकालीन कवि जीवन और समाज को यथास्थिति के रूप में स्वीकार नहीं करता, बल्कि उसके अंतर्विरोधों, असमानताओं और विसंगतियों की पहचान करते हुए उनका आलोचनात्मक मूल्यांकन करता है। इस संदर्भ में मिथक एक महत्वपूर्ण माध्यम बन जाता है, जिसके द्वारा कवि अतीत के प्रतीकों और आख्यानों को वर्तमान के प्रश्नों से जोड़कर समाज की संरचनाओं की समीक्षा करता है।

मिथकीय आख्यानों में निहित सत्ता-संबंध, नैतिक द्वंद्व और सामाजिक संरचनाएँ समकालीन कवियों को वर्तमान की आलोचना के लिए आधार प्रदान करती हैं। रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथों के पात्र तथा प्रसंग आधुनिक समाज में व्याप्त समस्याओं को समझने के लिए नए संदर्भों में प्रयुक्त किए जाते हैं। इस प्रकार मिथक केवल सांस्कृतिक स्मृति नहीं रहता, बल्कि आलोचनात्मक विमर्श का सक्रिय उपकरण बन जाता है।

5.1 सत्ता और राजनीति की आलोचना

समकालीन हिंदी कविता में सत्ता की आलोचना एक प्रमुख प्रवृत्ति रही है। आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में राजनीतिक संस्थाओं, प्रशासनिक तंत्र और सामाजिक शक्ति संरचनाओं के प्रति कवियों ने प्रश्न उठाए हैं। मिथकीय संदर्भों के माध्यम से सत्ता के चरित्र, उसके दमनकारी स्वरूप और नैतिक पतन को उजागर किया गया है।

महाभारत का हस्तिनापुर, जो कभी राजसत्ता और राजनीतिक संघर्ष का केंद्र था, आधुनिक कविता में सत्ता के प्रतीक के रूप में प्रयुक्त होता है। धृतराष्ट्र की अंधता केवल शारीरिक दुर्बलता नहीं, बल्कि सत्ता में बैठे लोगों की नैतिक अंधता का प्रतीक बन जाती है। इसी प्रकार दुर्योधन सत्ता-लालसा और अहंकार का प्रतिनिधित्व करता है।

समकालीन कवि इन मिथकीय प्रतीकों के माध्यम से यह प्रश्न उठाते हैं कि क्या आधुनिक समाज में सत्ता वास्तव में न्याय और जनकल्याण के मूल्यों पर आधारित है? इस प्रकार मिथक राजनीतिक आलोचना का प्रभावी माध्यम बनता है। धूमिल जैसे कवियों की कविता में व्यवस्था के प्रति असंतोष और राजनीतिक विडंबनाओं की तीखी अभिव्यक्ति दिखाई देती है। उनके यहाँ कविता सत्ता के सामने प्रश्न खड़े करने और लोकतांत्रिक मूल्यों की समीक्षा करने का माध्यम बन जाती है।

5.2 सामाजिक असमानता और जातिगत संरचनाओं की आलोचना

समकालीन हिंदी कविता में मिथकों का पुनर्पाठ सामाजिक असमानताओं को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम बना है। पारंपरिक आख्यानों में जिन पात्रों को सीमित या नकारात्मक दृष्टि से देखा गया था, आधुनिक कवियों ने उन्हें नए सामाजिक संदर्भों में पुनः स्थापित किया है। एकलव्य और शंबूक जैसे पात्र इसके महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। एकलव्य का चरित्र आज सामाजिक अवसरों की असमानता और ज्ञान तक पहुँच के अधिकार का प्रतीक बन गया है। इसी प्रकार शंबूक का प्रसंग जातिगत भेदभाव और सामाजिक बहिष्कार के प्रश्नों को सामने लाता है।

दलित विमर्श ने मिथकीय पुनर्पाठ को एक नई दिशा प्रदान की है। दलित दृष्टिकोण से मिथकों को देखने पर यह स्पष्ट होता है कि साहित्य केवल स्थापित दृष्टिकोणों का समर्थन नहीं करता, बल्कि वह उन आवाजों को भी सामने ला सकता है जिन्हें इतिहास और परंपरा में पर्याप्त स्थान नहीं मिला। इस प्रकार मिथक सामाजिक न्याय और समानता के प्रश्नों को उठाने का प्रभावी माध्यम बन जाता है।

5.3 स्त्री-विमर्श और पितृसत्तात्मक संरचनाओं की आलोचना

समकालीन हिंदी कविता में स्त्री-विमर्श मिथकीय पुनर्पाठ का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष है। पारंपरिक मिथकों में स्त्री पात्रों को अक्सर आदर्श पत्नी, त्यागमूर्ति या सहनशील नारी के रूप में प्रस्तुत किया गया था। आधुनिक कवियों और कवयित्रियों ने इन पात्रों को नए दृष्टिकोण से समझते हुए उनकी स्वतंत्र चेतना और संघर्ष को सामने रखा। सीता का चरित्र आधुनिक कविता में केवल पतिव्रता और त्याग की प्रतिमूर्ति नहीं है, बल्कि वह सामाजिक दबावों, अग्निपरीक्षा, निर्वासन और स्त्री अस्मिता के प्रश्नों से जूझती हुई एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में दिखाई देती है। द्रौपदी का पुनर्पाठ स्त्री के सम्मान, सत्ता संघर्ष और पुरुष प्रधान व्यवस्था के विरुद्ध प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में किया गया है। इसी प्रकार अहिल्या का मिथक स्त्री की सामाजिक स्थिति, नियंत्रण और मुक्ति के प्रश्नों से जुड़ जाता है। समकालीन कवयित्रियाँ मिथकों के माध्यम से यह स्थापित करती हैं कि स्त्री केवल कथा की पात्र नहीं, बल्कि अपनी स्वतंत्र इच्छा, अनुभव और विचारों वाली पूर्ण मानवीय इकाई है। इस प्रकार मिथकीय पुनर्व्याख्या स्त्रीवादी आलोचना का सशक्त माध्यम बनती है।

5.4 सांस्कृतिक रूढ़ियों और परंपरा की आलोचना

समकालीन हिंदी कविता परंपरा को अस्वीकार नहीं करती, बल्कि उसका आलोचनात्मक पुनर्मूल्यांकन करती है। कवि सांस्कृतिक परंपराओं में मौजूद सकारात्मक मानवीय मूल्यों को स्वीकार करते हैं, लेकिन उन रूढ़ियों और असमानताओं का विरोध करते हैं जो मानव स्वतंत्रता और समानता के विरुद्ध हैं। मिथक इस प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि वह समाज की सामूहिक स्मृति का हिस्सा होता है। जब कवि किसी मिथकीय कथा का पुनर्पाठ करता है, तो वह केवल अतीत की व्याख्या नहीं करता, बल्कि वर्तमान संस्कृति की भी समीक्षा करता है। इस प्रकार मिथक सांस्कृतिक आत्मविश्लेषण का माध्यम बन जाता है। वह समाज को अपनी परंपराओं, विश्वासों और मूल्यों पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित करता है।

5.5 आधुनिक जीवन की विसंगतियों की आलोचना

समकालीन हिंदी कविता में मिथकीय प्रतीकों का प्रयोग आधुनिक जीवन की समस्याओं को व्यक्त करने के लिए भी किया गया है। उपभोक्तावाद, अकेलापन, नैतिक संकट, हिंसा, पर्यावरण संकट और मानवीय संबंधों का विघटन आधुनिक जीवन की प्रमुख चुनौतियाँ हैं। कवि मिथकीय संदर्भों के माध्यम से इन समस्याओं को अधिक व्यापक अर्थ प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, महाभारत का युद्ध आधुनिक मानव सभ्यता में निरंतर चल रहे संघर्षों और हिंसा का प्रतीक बन सकता है। इसी प्रकार निर्वासन का मिथक आधुनिक मनुष्य के अकेलेपन और विस्थापन की अनुभूति को व्यक्त कर सकता है। इस प्रकार मिथक आधुनिक जीवन की जटिलताओं को समझने और व्यक्त करने का प्रभावशाली माध्यम बन जाता है।

5.6 मिथक और आलोचनात्मक चेतना का संबंध

समकालीन हिंदी कविता में मिथक और आलोचना का संबंध अत्यंत गहरा है। मिथक कवि को केवल विषय या प्रतीक प्रदान नहीं करता, बल्कि उसे सामाजिक वास्तविकताओं की समीक्षा करने की दृष्टि भी प्रदान करता है।
मिथकीय पुनर्पाठ के माध्यम से कवि—

- स्थापित मान्यताओं पर प्रश्न उठाता है।
- सामाजिक अन्याय को उजागर करता है।
- सत्ता संरचनाओं की आलोचना करता है।

- हाशिये के समूहों को अभिव्यक्ति प्रदान करता है।
- मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना करता है।

इस दृष्टि से मिथक आलोचनात्मक चेतना का वाहक बन जाता है। वह अतीत और वर्तमान के बीच संवाद स्थापित करते हुए समाज को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है। समकालीन हिंदी कविता में आलोचना तत्व केवल प्रतिरोध या नकारात्मक दृष्टि तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक पुनर्निर्माण की सकारात्मक प्रक्रिया भी है। मिथकों के माध्यम से कवि समाज की विसंगतियों को उजागर करते हुए बेहतर मानवीय व्यवस्था की कल्पना प्रस्तुत करते हैं। मिथकीय पुनर्पाठ ने हिंदी कविता को वैचारिक गहराई प्रदान की है और उसे सामाजिक परिवर्तन के विमर्श से जोड़ा है। इस प्रकार समकालीन हिंदी कविता में मिथक और आलोचना का संबंध परंपरा और आधुनिकता के रचनात्मक संवाद का उदाहरण है। मिथक जहाँ सांस्कृतिक स्मृति प्रदान करता है, वहीं आलोचनात्मक दृष्टि उसे वर्तमान की समस्याओं से जोड़कर जीवंत और प्रासंगिक बनाती है।

6. मिथकीय पुनर्पाठ : परंपरा, आधुनिकता और वैकल्पिक विमर्श

समकालीन हिंदी कविता में मिथकीय पुनर्पाठ एक महत्वपूर्ण साहित्यिक और वैचारिक प्रक्रिया के रूप में विकसित हुआ है। पुनर्पाठ का अर्थ केवल पुराने मिथकों को नए रूप में प्रस्तुत करना नहीं है, बल्कि उनके भीतर निहित अर्थों, संरचनाओं और वैचारिक पक्षों की नए दृष्टिकोण से समीक्षा करना है। आधुनिक कवि मिथकों को वर्तमान सामाजिक संदर्भों से जोड़कर उनमें छिपे हुए उन पक्षों को सामने लाते हैं, जो परंपरागत व्याख्याओं में उपेक्षित रहे हैं। मिथकीय पुनर्पाठ की यह प्रक्रिया परंपरा और आधुनिकता के बीच एक रचनात्मक संवाद स्थापित करती है। समकालीन कवि न तो मिथकों को पूरी तरह अस्वीकार करते हैं और न ही उन्हें अपरिवर्तनीय सत्य मानते हैं। वे मिथकों में निहित सांस्कृतिक अनुभवों को स्वीकार करते हुए उनकी आलोचनात्मक समीक्षा करते हैं। इस प्रकार मिथक आधुनिक चेतना के अनुरूप नए अर्थ ग्रहण करता है।

6.1 परंपरा और आधुनिकता का संवाद

भारतीय साहित्य में परंपरा सदैव परिवर्तनशील रही है। प्रत्येक युग के साहित्यकारों ने अपने समय की आवश्यकताओं के अनुसार परंपरा की पुनर्व्याख्या की है। समकालीन हिंदी कविता में भी मिथकों का प्रयोग इसी प्रक्रिया का हिस्सा है। आधुनिक कवि मिथकीय कथाओं में केवल धार्मिक या नैतिक संदेश नहीं खोजते, बल्कि उनमें उपस्थित मानवीय संघर्षों और सामाजिक प्रश्नों को पहचानते हैं। राम, कृष्ण, कर्ण, द्रौपदी, सीता, एकलव्य और शंबूक जैसे पात्र आधुनिक संदर्भों में नए अर्थ प्राप्त करते हैं। उदाहरण के लिए, कर्ण का चरित्र अब केवल महाभारत के योद्धा के रूप में नहीं देखा जाता, बल्कि वह सामाजिक उपेक्षा, पहचान के संघर्ष और प्रतिभा के बावजूद अवसरों से वंचित व्यक्ति का प्रतीक बन जाता है। इसी प्रकार एकलव्य सामाजिक न्याय और समान अवसर के प्रश्नों से जुड़ जाता है। इस प्रकार मिथकीय पुनर्पाठ परंपरा को जीवंत बनाए रखने के साथ-साथ उसे आधुनिक सामाजिक चेतना से जोड़ता है।

6.2 स्त्रीवादी दृष्टि से मिथकों का पुनर्पाठ

समकालीन हिंदी कविता में स्त्रीवादी दृष्टिकोण ने मिथकीय पुनर्पाठ को नई दिशा प्रदान की है। पारंपरिक मिथकीय आख्यानों में स्त्री पात्रों को अक्सर पुरुष-केंद्रित दृष्टि से प्रस्तुत किया गया था। आधुनिक कवयित्रियों ने इन पात्रों को उनकी अपनी चेतना, अनुभव और संघर्षों के संदर्भ में पुनः समझने का प्रयास किया है।

सीता का पुनर्पाठ स्त्री के सामाजिक और व्यक्तिगत अस्तित्व के प्रश्नों से जुड़ता है। आधुनिक दृष्टि में सीता केवल त्याग और सहनशीलता का प्रतीक नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक अन्याय और पितृसत्तात्मक व्यवस्था के विरुद्ध प्रश्न उठाने

वाली चेतना का प्रतिनिधित्व करती हैं। द्रौपदी का मिथक भी आधुनिक कविता में स्त्री सम्मान, आत्मनिर्णय और प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में सामने आता है। द्रौपदी के माध्यम से यह प्रश्न उठाया जाता है कि सामाजिक और राजनीतिक संरचनाओं में स्त्री की स्थिति क्या है। इस प्रकार स्त्रीवादी पुनर्पाठ मिथकों में उपस्थित लैंगिक संरचनाओं की आलोचना करते हुए स्त्री की स्वतंत्र पहचान को स्थापित करता है।

6.3 दलित विमर्श और मिथकीय पुनर्स्थापना

समकालीन हिंदी साहित्य में दलित विमर्श ने मिथकों को देखने की एक नई दृष्टि विकसित की है। इस दृष्टि में उन पात्रों और प्रसंगों को केंद्र में लाया गया है, जो पारंपरिक आख्यानों में उपेक्षित या हाशिये पर रहे हैं।

एकलव्य और शंबूक जैसे पात्र दलित विमर्श में विशेष महत्व रखते हैं। एकलव्य का प्रसंग शिक्षा और ज्ञान तक समान पहुँच के प्रश्न को सामने लाता है, जबकि शंबूक का प्रसंग सामाजिक व्यवस्था में मौजूद असमानताओं की आलोचना करता है। मिथकीय पुनर्पाठ के माध्यम से दलित साहित्यकार यह स्थापित करते हैं कि साहित्य में केवल प्रभुत्वशाली वर्गों के अनुभव ही महत्वपूर्ण नहीं हैं, बल्कि हाशिये के समुदायों की पीड़ा, संघर्ष और आकांक्षाएँ भी समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

6.4 आदिवासी और लोक दृष्टि से मिथकों की पुनर्व्याख्या

समकालीन साहित्य में आदिवासी और लोक दृष्टि से मिथकों को देखने की प्रवृत्ति भी विकसित हुई है। लोक मिथक प्रकृति, समुदाय और मानव जीवन के संबंधों को व्यक्त करते हैं।

आदिवासी मिथकों में प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व, सामूहिक जीवन और पर्यावरणीय संतुलन की चेतना दिखाई देती है। आधुनिक पर्यावरण संकट के संदर्भ में इन मिथकों की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ गई है।

इस दृष्टि से मिथक केवल धार्मिक आख्यान नहीं, बल्कि प्रकृति और मानव संबंधों को समझने का सांस्कृतिक माध्यम भी हैं।

6.5 उत्तर-आधुनिक दृष्टि और मिथकीय विखंडन

उत्तर-आधुनिक साहित्यिक दृष्टि स्थापित कथाओं और एकमात्र सत्य की अवधारणा पर प्रश्न उठाती है। इस दृष्टिकोण से मिथकों का पुनर्पाठ करते हुए उनके भीतर मौजूद बहुविध अर्थों को खोजा जाता है।

समकालीन कवि मिथकों के पारंपरिक अर्थों को चुनौती देते हुए वैकल्पिक व्याख्याएँ प्रस्तुत करते हैं। वे यह दिखाते हैं कि किसी भी मिथकीय कथा का अर्थ स्थिर नहीं होता, बल्कि समय, समाज और दृष्टिकोण के अनुसार बदलता रहता है।

इस प्रकार मिथकीय पुनर्पाठ साहित्य में बहुलता, संवाद और आलोचनात्मक चेतना को बढ़ावा देता है।

6.6 मिथकीय पुनर्पाठ की साहित्यिक महत्ता

समकालीन हिंदी कविता में मिथकीय पुनर्पाठ की प्रमुख उपलब्धियाँ निम्नलिखित हैं—

1. मिथकों को नए सामाजिक संदर्भ प्रदान करना।
2. उपेक्षित पात्रों को साहित्यिक पहचान देना।
3. सामाजिक और सांस्कृतिक रूढ़ियों की आलोचना करना।
4. स्त्री, दलित और हाशिये के विमर्शों को अभिव्यक्ति देना।
5. परंपरा और आधुनिकता के बीच संवाद स्थापित करना।

अतः मिथकीय पुनर्पाठ समकालीन हिंदी कविता की आलोचनात्मक और सृजनात्मक शक्ति का महत्वपूर्ण आधार है।

7. निष्कर्ष

समकालीन हिंदी कविता में मिथक और आलोचना का संबंध अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है। मिथक यहाँ केवल अतीत की सांस्कृतिक स्मृति या धार्मिक आख्यान नहीं रह जाता, बल्कि वह वर्तमान सामाजिक यथार्थ को समझने और उसकी आलोचना करने का प्रभावशाली माध्यम बन जाता है। आधुनिक हिंदी कवियों ने मिथकों को पुनः व्याख्यायित करते हुए उनमें निहित सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और मानवीय अर्थों को नए संदर्भ प्रदान किए हैं।

इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि समकालीन हिंदी कविता में मिथकीय प्रयोग का उद्देश्य अतीत का पुनरुत्थान मात्र नहीं है, बल्कि वर्तमान की समस्याओं और अंतर्विरोधों को समझना भी है। कवियों ने रामायण, महाभारत, पुराणों तथा लोक परंपराओं के मिथकीय पात्रों और प्रसंगों को आधुनिक जीवन के प्रश्नों से जोड़कर सामाजिक आलोचना का माध्यम बनाया है।

मिथकीय पुनर्पाठ के माध्यम से समकालीन कविता ने सत्ता-संरचनाओं, सामाजिक असमानताओं, जातिगत भेदभाव, पितृसत्तात्मक व्यवस्था और सांस्कृतिक रूढ़ियों की आलोचना की है। सीता, द्रौपदी, अहिल्या, कर्ण, एकलव्य और शंबूक जैसे पात्र आधुनिक संदर्भों में नए अर्थ प्राप्त करते हैं और वे सामाजिक न्याय, अस्मिता तथा प्रतिरोध के प्रतीक बन जाते हैं।

विशेष रूप से स्त्री विमर्श और दलित विमर्श ने मिथकों की पारंपरिक व्याख्याओं को चुनौती देते हुए उन्हें नए दृष्टिकोण प्रदान किए हैं। इससे साहित्य में उन अनुभवों और आवाजों को स्थान मिला है, जो लंबे समय तक हाशिये पर रहे थे। मिथकीय पुनर्पाठ ने हिंदी कविता को अधिक लोकतांत्रिक, संवेदनशील और आलोचनात्मक बनाया है।

समकालीन हिंदी कविता में मिथक और आलोचना का संबंध परंपरा और आधुनिकता के रचनात्मक संवाद को प्रस्तुत करता है। मिथक जहाँ साहित्य को सांस्कृतिक गहराई प्रदान करता है, वहीं आलोचनात्मक चेतना उसे वर्तमान सामाजिक संदर्भों से जोड़ती है। इस प्रकार मिथक आधुनिक कविता में केवल प्रतीकात्मक संरचना नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन, वैचारिक प्रतिरोध और मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना का माध्यम बन जाता है।

अंततः कहा जा सकता है कि समकालीन हिंदी कविता में मिथक एक जीवंत और परिवर्तनशील साहित्यिक शक्ति है। वह अतीत की स्मृतियों को वर्तमान की चुनौतियों से जोड़ते हुए साहित्य को नई दृष्टि, नई संवेदना और व्यापक मानवीय परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है। मिथक और आलोचना का यह अंतर्संबंध हिंदी कविता की वैचारिक समृद्धि और सामाजिक प्रतिबद्धता का महत्वपूर्ण प्रमाण है।

संदर्भ सूची

1. अज्ञेय (सं.). (1966). *तार सप्तक* (संशोधित संस्करण). नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ.
2. अनामिका. (2014). *टोकरी में दिगंत.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.
3. अरुण कमल. (2009). *अपनी केवल धार.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.
4. उपाध्याय, बलदेव. (2008). *भारतीय दर्शन.* वाराणसी: चौखम्भा ओरिएंटालिया.
5. कुमार, राजेंद्र. (सं.). (2016). *समकालीन हिंदी कविता : चयन और मूल्यांकन.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.
6. कुँवर नारायण. (2002). *आत्मजयी.* नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ.
7. कुँवर नारायण. (2008). *वाजश्रवा के बहाने.* नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ.
8. केदारनाथ सिंह. (2012). *अकाल में सारस.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.
9. त्रिपाठी, विश्वनाथ. (2015). *हिंदी आलोचना.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.

10. धूमिल. (2011). *संसद से सड़क तक.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.
11. नवल, नंदकिशोर. (2013). *समकालीन हिंदी कविता.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.
12. पांडेय, मैनेजर. (2008). *साहित्य और इतिहास-दृष्टि.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.
13. बच्चन सिंह. (2010). *आधुनिक हिंदी आलोचना के बीज शब्द.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.
14. डबराल, मंगलेश. (2000). *पहाड़ पर लालटेन.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.
15. मिश्र, विद्यानिवास. (2005). *भारतीयता की पहचान.* नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.
16. शर्मा, रामविलास. (2002). *नई कविता और अस्तित्ववाद.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.
17. सिंह, नामवर. (2010). *कविता के नए प्रतिमान.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.
18. सिंह, नामवर. (2011). *दूसरी परंपरा की खोज.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.
19. सिंह, नामवर. (2006). *इतिहास और आलोचना.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.
20. शर्मा, रामविलास. (2006). *भारतीय साहित्य की भूमिका.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.
21. वाल्मीकि. (2018). *श्रीमद् वाल्मीकीय रामायण* (गीता प्रेस संस्करण). गोरखपुर: गीता प्रेस.